जनवाचन आंदोलन

बाल पुस्तकमाला

" किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकेट का राज है
किताबों में साइंस की आवाज है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है
क्या तुम इस संसार में नहीं जाना चाहोगे?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं "

–सफ़दर हाश्मी

छंदों में विज्ञान।
इस पुस्तक में तैरने के सिद्धांत
और नावों एवं जहाजों के इतिहास को
बेहद रोचक और गेय छंदों में पेश किया गया है।
एक बार सुनते ही बच्चों को ये छंद याद हो जाएंगे।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य: 10 रुपए **B-8** Price 10 Rupees

हमारी नाव चली

डा. एस. पी. खत्री

हमारी नाव चली : डा. एस.पी. खत्री
Hamari Nao Chali: Dr. S.P. Khatri

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

© सर्वाधिकार सुरक्षित,
भारत ज्ञान विज्ञान समिति

रेखांकन : मनोज पंडित
लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष: 1997, 2000, 2003

मूल्य: 10 रुपए

Bharat Gyan Vigyan Samithi
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943
Fax : 91 - 011 - 26569773
email: bgvs@vsnl.net

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

हमारी नाव चली

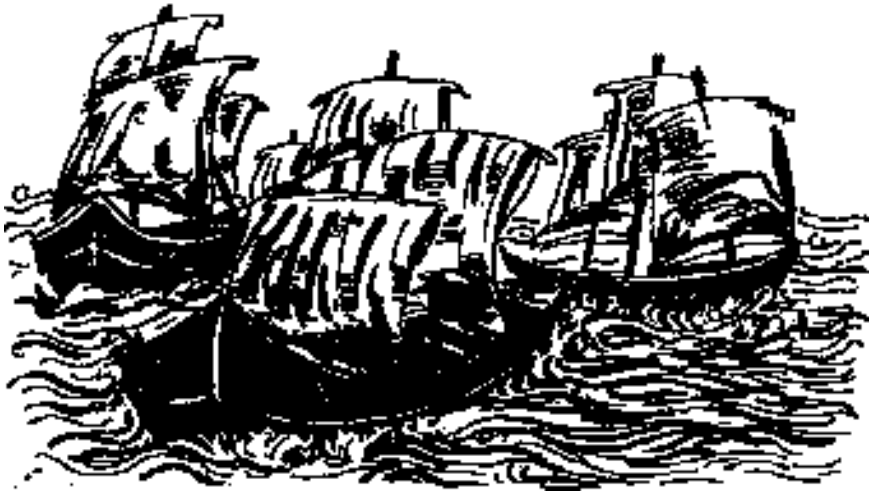

डा. एस.पी. खत्री

हमारी नाव चली

आओ भैया तुम्हें सुनायें,
सुंदर एक कहानी
मगर नहीं राजा रानी की,
पर है बहुत पुरानी।

छोटी-छोटी नावें देखो,
हमको सैर करातीं,
पानी पर अठखेली करतीं,
सभी ओर ले जातीं।

मल्लाहों को अलग बिठाकर,
हाथ लिए पतवार,
धीरे–धीरे खेकर नैया,
हम ले जाते पार।

कुछ पुरखे थे बसे हमारे,
नदियों के ही तीर।
कंद, मूल, फल खाकर जीते,
पीते निर्मल नीर।

सोचो तो जब नाव नहीं थी,
तब हम क्या कर सकते?
लंबी-लंबी, गहरी नदियां
कैसे पार उतरते?

बालक खेला करते थे नित,
बैठे नदी किनारे।
तैर कभी कुछ पार उतरते,
कुछ रहते मन मारे।

हो जाती थीं छिछली नदियां,
आसानी से पार।
बाढ़ मगर जब आ जाती थी,
जाते हिम्मत हार।

एक खिलाड़ी बालक आया,
लिए पेड़ की टहनी।
ज़ोर लगा पानी में फेंकी,
रही तैरती टहनी।

हुआ अचंभा सबको बेहद,
टहनी जरा न डूबी।
इधर-उधर मंडलाती जाती,
यह थी उसकी खूबी।

लड़के सब हो गए इकट्ठे,
करने को खिलवाड़।
लगे फेंकने लंबी शाखें,
पीपल हो या ताड़ ।

वे सब के सब रहे तैरते,
बड़े मौज़ में बहते।
लड़के उनको देख खुशी से,
आपे में क्या रहते?

पानी पर क्या तैर सकेगी,
मोटी लकड़ी भारी?
बड़े पेड़ का तना काटने
की तब हुई तैयारी।

रहा तैरता बड़ी शान से,
बड़े पेड़ का लट्ठा।
उसके बाद गया तैराया,
बड़े तनों का गट्ठा।

उस गट्ठे पर बैठे बालक,
ले पतवार चलाते।
और सभी होकर बेखटके,
नदी पार हो जाते।

बड़े पेड़ के तने काट कर,
उन्हें खोखला करते।
और बनाकर छोटी नावें,
उन पर पार उतरते।

बनने लगीं तभी से नावें,
छोटी, बड़ी, हमारी।
पानी से क्यों कर डर लगता,
विजय हुई थी भारी।

छोटी और बड़ी नावों पर,
पाल लगाए जाते।
लेकर हवा गोद में अपनी,
दूर-दूर पहुंचाते।

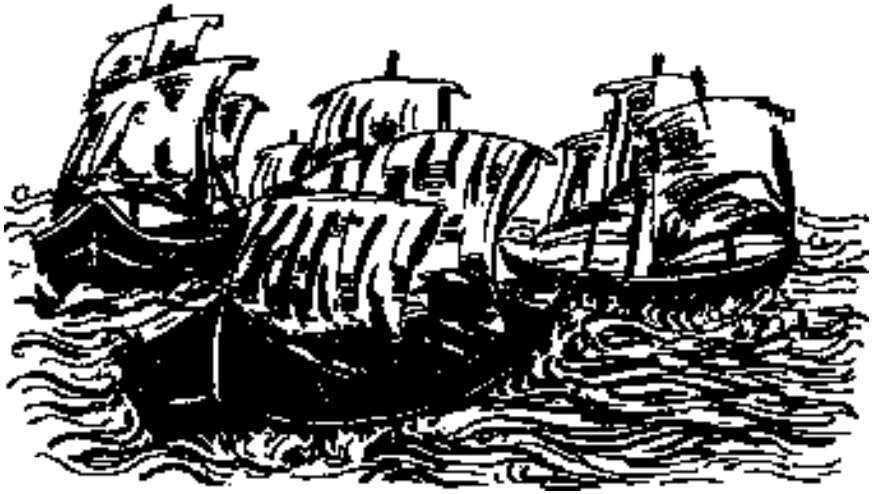

बहुत दिनों तक पाल लगाकर,
हम थे नावें खेते।
दूर देश में जाते रहते,
खूब सैर कर लेते।

कभी लादकर माल निराला,
दूर-दूर ले जाते।
और वहां से सोना-चांदी,
भर-भर कर ले आते।

मगर समुद्रों में भय लगता,
आते जब तूफ़ान।
डूबी, जाने कितनी नावें,
डूब गए बलवान।

हिम्मत कभी न खोई हमने,
कभी नहीं घबड़ाये।
यही सोचते रहते हरदम,
सूझ नई कुछ आये।

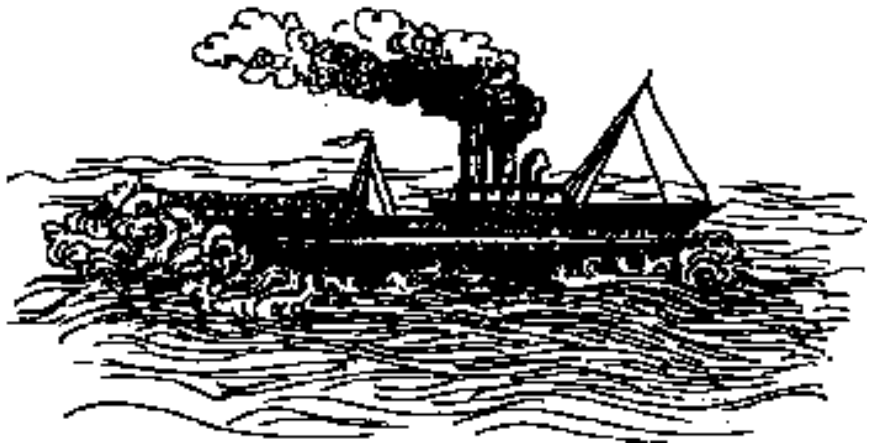

दूर देश के परदेशी ने,
इंजन एक बनाया।
जिससे सारी नौकाओं की,
पलट गई तब काया।

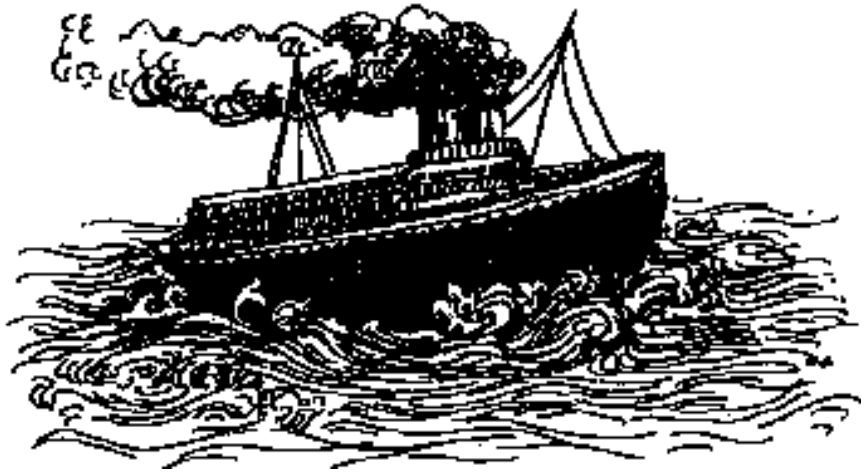

बलशाली था इतना इंजन,
कभी न वह था थकता।
बड़े जहाज़ों को था खेता,
हरदम चौकस रहता।

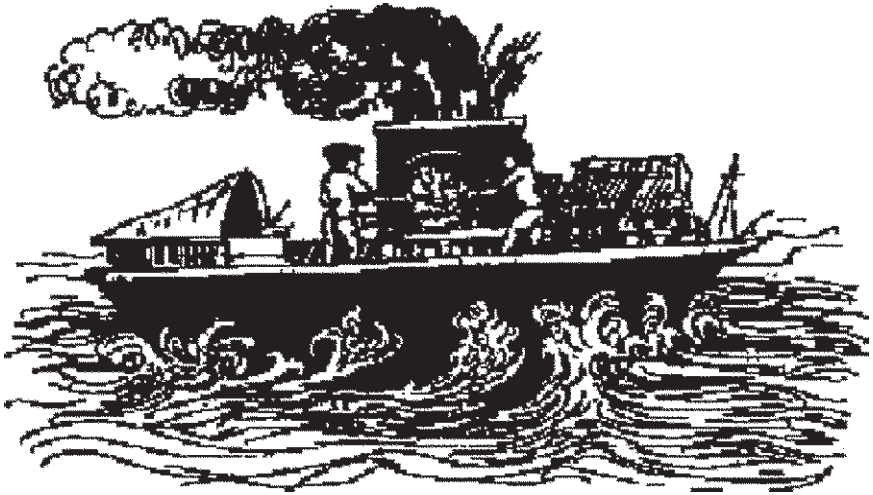

जला कोयला करता उसमें,
भाप इकट्ठी होती।
जिससे इंजन चलता रहता,
सैर दूर की होती।

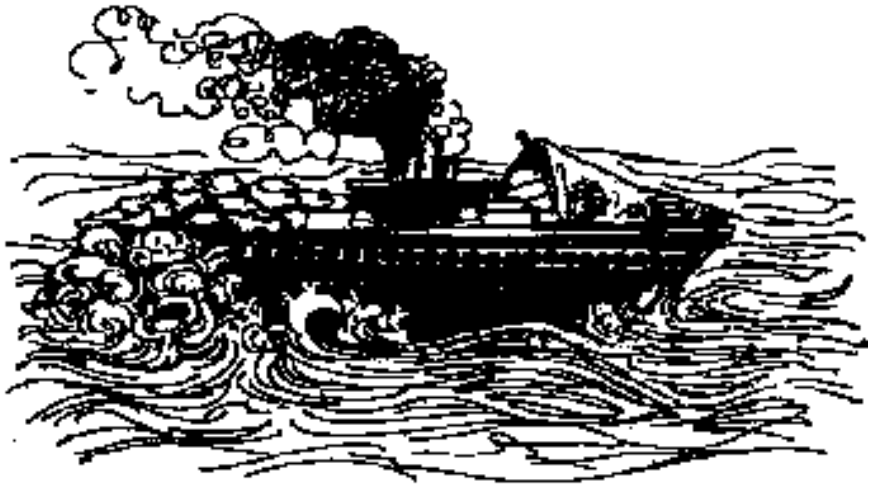

इन्हीं जहाज़ों ने ही देखो,
है व्यापार बढ़ाया।
इसी लिए तो देश-देश में,
सुख-वैभव है छाया।

इन्हीं जहाज़ों पर ले आते,
दूर देश की चीज़ें।
इन्हीं जहाज़ों पर ले जाते,
अपने घर की चीज़ें।

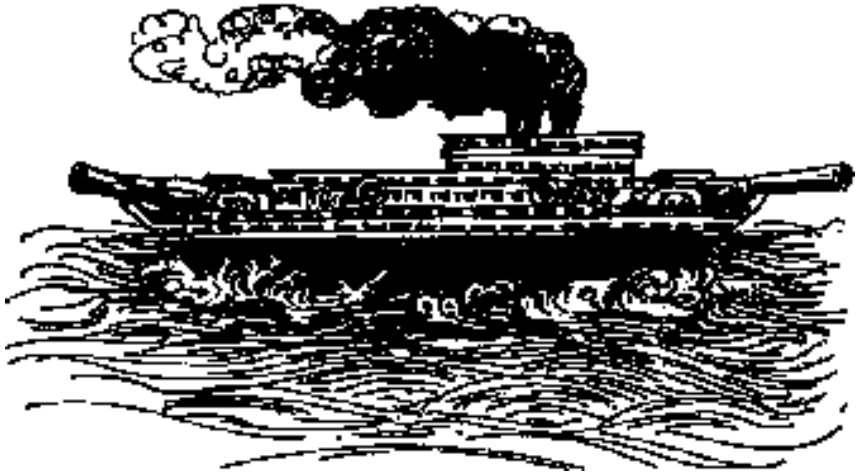

भारत के जंगी जहाज़ हैं,
पहरेदार हमारे।
लंबी-चौड़ी तोप चढ़ाये,
भारत के रखवारे।

जापानी बच्चों को हमने,
हाथी जब पहुंचाया।
धूम मच गई सब बच्चों में,
सब का मन हर्षाया।

देख लटकता हाथी ऊपर,
बच्चों को मन भाया।
चिड़िया–घर में लाकर रक्खा,
मज़ा बहुत ही आया।

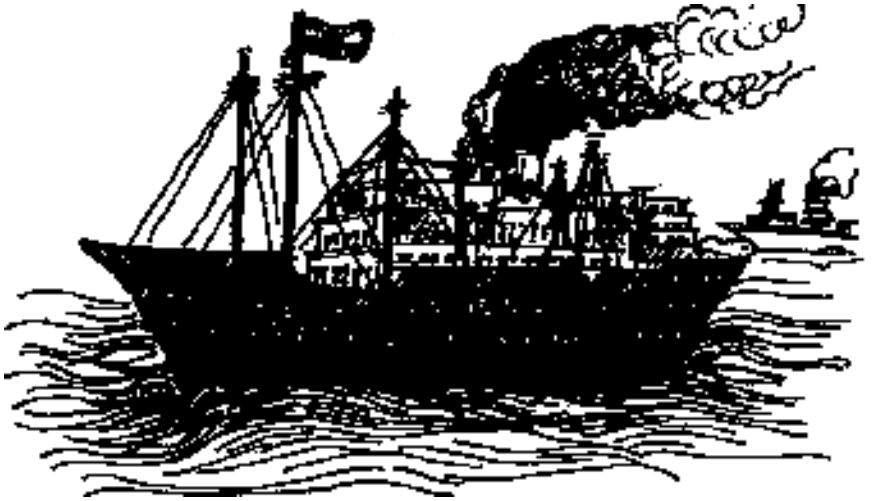

सागर हमने जीत लिया है,
छूट गया डर सारा।
चले चीरता उसकी छाती,
बड़ा जहाज़ हमारा।

अगर नहीं वह छोटा बालक,
टहनी को तैराता।
बनतीं कैसे ये नौकाएं,
क्या जहाज़ बन पाता?

❐❐❐